भूले-बिसरे शायर

ज़हीर कुरेशी
108, त्रिलोचन टावर, संगम सिनेमा के सामने, गुरुबक्श की तलैया, पो.ऑ. जीपीओ, भोपाल- 462001 (म.प्र.), मो. 09425790565

नव्यता एवं प्रतिशीलता के बीच का शायर : ज़हूर अहमद 'ज़हूर

शिवपुरी निवासी ज़हूर अहमद 'ज़हूर' मेरी नज़र में एक ऐसे शायर थे, जो केवल कर्म में विश्वास रखते थे। लेकिन, उनकी साँगठनिक क्षमता के कारण बज़्मे-उर्दू, शिवपुरी ने कुछेक उल्लेखनीय कार्यक्रमों की बुनियाद रखी। जिनमें से जश्ने-ईद-मिलन समारोह को अवश्य याद किया जा सकता है- जो सौमनस्य बढ़ाने की कोशिश के तौर पर हर साल सेवइयाँ ईद पर शिवपुरी में आयोजित किया जाता था।

ज़हूर कुछ जुनूनी किस्म के इन्सान थे। अपने जीवन-काल में शासकीय नौकरी के दौरान ज़हूर साहब ने वर्ष 1970 से 1975 तक 'इदराक' शीर्षक से उर्दू रिसाले का सफलतापूर्वक प्रकाशन एवं प्रसार किया। उस समय उर्दू में प्रिंटिंग प्रेस की भारी कठिनाई थी। इसलिए 'इदराक' को हाथ से लिख कर और साइक्लोस्टाइल करवा के ज़हूर अहमद 'ज़हूर' ने पत्रिका लगभग 5 वर्ष तक निकाली और देश भर में प्रसारित भी की।

सूफ़ी कवि अमीर ख़ुसरो पर लिखा गया ज़हूर अहमद 'ज़हूर' का फ़ीचर आकाशवाणी पर 11 एपीसोड में प्रसारित हुआ। जिसे आकाशवाणी, दिल्ली ने फ़ीचर्स की श्रृंखला में गोल्ड मेडल दे कर सम्मानित किया।

अपने अंतिम प्रमुख प्रोजेक्ट के रूप में ज़हूर साहब गंभीरतापूर्वक 'शिवपुरी ज़िले का विगत पाँच दशक का साहित्यिक इतिहास' पर काम कर रहे थे। जो 11 मई, 2008 को हुए उनके आकस्मिक निधन के कारण अधूरा ही रह गया।

अपने 50 वर्ष लंबे साहित्यिक अवदान के प्रति घोर लापरवाही को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि ज़हूर अहमद 'ज़हूर' के जीवन-काल में उनका एक भी ग़ज़ल-संग्रह का प्रकाशन नहीं हुआ। शिवपुरी निवासी डॉ. हरि प्रकाश 'हरि' ने मुझे बताया कि डॉ. 'हरि' और ज़हूर साहब का परिवार मिल कर मरणोपरान्त ज़हूर अहमद 'ज़हूर' की ग़ज़लों के संग्रह 'पत्थरों से मत उलझ' के प्रकाशन पर निरंतर काम कर रहे हैं।

'अक्षर पर्व' का 'भूले-बिसरे शायर' स्तंभ ऐसे ही विरल एवं प्रतिभाशाली शायरों को पाठकों से रू-ब-रू कराने की महत्वपूर्ण कोशिश है- जिनकी अपेक्षित चर्चा नहीं हो पाई। जिन्हें काव्य-संसार में उतना महत्व नहीं मिल पाया, जितने के वे अधिकारी थे।

जहाँ तक ज़हूर अहमद 'ज़हूर' की शायरी का सवाल है तो वे जदीद शायरी के बहुत निकट के शायर थे। समसामयिक जीवन के अक्स उनकी शायरी में बहुलता से दिखाई देते हैं। हाशिए पर खड़े अंतिम आदमी के प्रति उनकी सहानुभूति जग-ज़ाहिर है। लेकिन, पूरी तरह प्रगतिशील शायरों की फेहरिस्त में भी उन्हें नहीं रखा जा सकता।

बहरहाल... प्रारंभिक रूप से अपनी ग़रीबी के दंश को ज़हूर कभी नहीं भूल पाए। अंतिम आदमी के संकट, कठिनाइयां एवं दर्द हमेशा उनकी शायरी में जगह पाते रहे। शायर का एक मतला गरीबों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को कुछ यूँ बयान करता है-

अजीब इक फ़िक्र, इक सदमा-सा रहता है मेरे दिल में,
हज़ारों मुफ़लिसों का दर्द ज़िन्दा है मेरे दिल में।

आज की वोट केन्द्रित.... धर्मोन्माद फैलाने वाली.... गंदी राजनीति पर भी ज़हूर अहमद 'ज़हूर' की नज़र रही। इस विषय में सबसे पहले शायर ने मतले में अपना सोच.... अपना मंतव्य कुछ इन शब्दों में प्रकट किया-

ऐसा नहीं किया, कभी ऐसा नहीं किया,
लाशों पे चढ़ के क़द कभी ऊँचा नहीं किया।

देश के सौमनस्य का वध करके सत्ता पर क़ाबिज प्रजातंत्र के सम्राटों से भी ज़हूर

जहाँ तक ज़हूर अहमद 'ज़हूर' की शायरी का सवाल है तो वे जदीद शायरी के बहुत निकट के शायर थे। समसामयिक जीवन के अक्स उनकी शायरी में बहुलता से दिखाई देते हैं। हाशिए पर खड़े अंतिम आदमी के प्रति उनकी सहानुभूति जग-ज़ाहिर है। लेकिन, पूरी तरह प्रगतिशील शायरों की फेहरिस्त में भी उन्हें नहीं रखा जा सकता। बहरहाल... प्रारंभिक रूप से अपनी ग़रीबी के दंश को ज़हूर कभी नहीं भूल पाए। अंतिम आदमी के संकट, कठिनाइयां एवं दर्द हमेशा उनकी शायरी में जगह पाते रहे। शायर का एक मतला गरीबों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को कुछ यूँ बयान करता है- अजीब इक फ़िक्र, इक सदमा-सा रहता है मेरे दिल में,हज़ारों मुफ़लिसों का दर्द ज़िन्दा है मेरे दिल में।